नेवी के यूनिट्स भी हैं जो कि वहां काम कर रहे हैं । हमें इस बात का ध्यान है कि उनकी सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत रखें ।

तीसरी बात माननीय सदस्य ने थाइलैंड गवर्नमेंट के बारे में पूछी कि थाइलैंड से भी कुछ सम्पर्क किया या नहीं ? हमारे नेवल हैडक्वार्टर्स को सम्पर्क करने के बाद यह सूचना मिली कि थाइलैंड गवर्नमेंट ने अपना एक डिस्ट्रायर एसकोर्ट भेज दिया है अंडेमान एरिया के आस पास और वह पेट्रोल करेगा । उन्होंने खुद सूचना दी है कि हम देखेंगे । उन्होंने अपना डेस्ट्रायर लगाया है कि जो भी फिशिंग ट्रालर्स वहां जाते हैं, वह भारत की सीमा में, जो कि एक्सक्लूसिव इकनामिक ज़ोन है, उसमें न घुसें । वह उस बात की देखभाल खुद करेंगे । 8 फरवरी से उन्होंने काम शुरू कर दिया है और 25 मार्च तक वह यह पेट्रोल करेंगे सारे आसपास के एरिया में । उन्होंने यह जिम्मेदारी ली है कि हम देखेंगे कि कोई आदमी या ट्रालर थाइलैंड गवर्नमेंट का हिन्दुस्तान की जो पानी की 200 मील की सीमा बनती है, जो एक्सक्लूसिव इकनामिक ज़ोन है, उसमें कोई न घुसे । उन्होंने यह आश्वासन दिया है और सूचना दी है ।

मैं यही तथ्य आपके सामने रख सकता हूं । हम इसकी और भी जानकारी करवा रहे हैं कि इसके क्या कारण थे । आगे और क्या स्टैप इसके बारे में लिये जायें, यह सोचा जायेगा ।

———

12.28 hrs.

MATTERS UNDER RULE 377

(i) FALLING PRICES OF SUGARCANE AND GUR

श्री मनी राम बागड़ी (मथुरा) : अध्यक्ष महोदय, अच्छा होता कि गन्ना, खंडसारी चीनी या जो भी किसान उत्पादन करता है, चाहे सरसों हो या कपास, उनके बारे में यहां अच्छी बहस होती और सदन कुछ निर्णय लेता । क्योंकि यह साधारण बात नहीं है ।

इस दफे हिन्दुस्तान में पहली दफा ऐसा मौका आया है कि 5 रुपये और साढ़े 4 रुपये क्विंटल गन्ने का भाव रहा है । लकड़ी जो कि जलाने के काम आती है वह 13 रुपये मन है । किसान जो गन्ना पैदा करता है वह गुड़, खंडसारी और चीनी के लिये करता है । लेकिन उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पंजाब में जो ईंट बनाने के भट्टे होते हैं उनके मालिक गन्ने को मोल लेकर ईंधन की जगह जलाने के काम में लाते हैं । यह बड़े अफसोस की बात है कि सारा खंडसारी का काम बन्द हो गया है, चीनी के कारखाने बन्द हो गये हैं और आज गन्ने को कोई पूछता नहीं है ।

आपका जो गुड़ है इसको तो बिल्कुल गणेश बना दिया गया है, इसकी पूजा के सिवाय और कोई काम में यह नहीं आ रहा है । आज किसान के मन में बड़ा भयंकर तूफ़ान उठ रहा है । किसान कितनी कठिनाई के साथ गन्ना पैदा करता है, घोर तपस्या के बाद गुड़ पैदा करता है, बड़ी मेहनत करने के बाद सरसों और कपास पैदा करता है । लेकिन भावों में उसका कितना शोषण होता है । विदेशी साम्राज्यवादी इस देश में आये और उन्होंने देश को लूटा । लेकिन हिन्दुस्तान के किसान की कमाई पर इतना बड़ा डाका कभी नहीं पड़ा, जितना बड़ा डाका इस वक्त भावों के जरिये उस पर पड़ रहा है । किसान लुटा जा रहा है ।

[श्री मनी राम बागड़ी]

उत्तर प्रदेश सरकार गुड़ पर 7 रुपये सैकड़ा सेल्स टैक्स लगाती है, बिहार सरकार 9 रुपये और मध्य प्रदेश सरकार 7 रुपये सैकड़ा सेल्स टैक्स लगाती है। शासन को क्या अधिकार है कि वह गुड़ पर इतना टैक्स लगाये ? जिन लोगों ने साल भर की घोर तपस्या के बाद गड़ पैदा किया है, उन की क्या हालत है ? जो गन्ना पैदा करते हैं, उनको क्या एवज़ाना मिलता है ? सरकार ने गेहूं का भाव निर्धारित किया है, लेकिन अगर बाज़ार में उसकी खरीदारी न हो, और वह सस्ता बिके, तो सरकार अपनी अखलाकी जिम्मेदारी निभाते हुए गेहूं को खरीदती है। ऐन उसी तरह देश में गड़ और गन्ने का सत्यानाश हो रहा है। कोई उन्हें खरीदता नहीं है। क्या यह सरकार की अखलाकी ज़िम्मेदारी नहीं है कि वह गन्ने और गुड़ को खरीदे ?

अगर सरकार ने कोई कदम न उठाया, तो इस देश में एक जलजला, एक भूचाल, आयेगा। आज यह देश ज्वालामुखी पर खड़ा है। जनता पार्टी को आगे बढ़ाने में किसानों का सब से ज्यादा हाथ रहा है, लेकिन आज वे सब से ज्यादा भूखे हैं। कांग्रेस वाले उन्हें चिढ़ा रहे हैं कि दे दिया जनता पार्टी को वोट, क्या गुड़ चाट कर आये हो, या गन्ना बोकर आये हो। मैं आपके माध्यम से सदन से कहना चाहता हूं कि वह इस भयंकर भूचाल की नौबत न आने दे। वह वक्त से पहले ही इस बारे में कुछ करें। किसान के गन्ने की कीमत सब से कम मुकर्रर की गई है, मगर सरकार वह भी नहीं देती है। गुड़ का भाव भी वह नहीं देती है। खंडसारी का काम बन्द हो रहा है; वह उसको नहीं चला पाती है। चीनी के कारखाने बन्द हो रहे हैं। कपास की दुर्दशा है। सरसों के भाव में भी किसान लूट रहा है। इस हालत में कैसे पैदावार बढ़ सकती है और कैसे देश जीवित रह सकता है ?

मैं चाहता हूं कि हम लोक सभा का और सब काम बन्द करके इस बारे में गम्भीरता से सोचें और किसानों को कोई रास्ता दिखाये। अगर यह सदन इस गंभीर मसले के बारे में कोई रास्ता नहीं निकालता है, तो किसानों को खुद कोई रास्ता निकालने के लिये मजबूर होना पड़ेगा। मैं आपके माध्यम से इस सदन और मंत्रियों को कहूंगा कि वे इसके लिए बाकायदा बहस के लिये कोई दिन रखें, ताकि किसानों को इस सदन की मार्फत कोई मुनासिब जवाब दिया जाये और उन्हें मुनासिब इन्साफ दिया जाये ताकि हिन्दुस्तान की किसानी जीवित रह सके।

(व्यवधान)**

MR. SPEAKER: Don't record anything. You will have an opportunity to discuss the Presidents Address and you can avail of that opportunity.... (*Interruptions*)

THE MINISTER OF STEEL AND MINES (SHRI BIJU PATNAIK): If the Speaker so desires, perhaps an appropriate day can be fixed and two hours allotted for a discussion.... (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Nothing has been recorded. I cannot decide this matter just now; it has to be decided by the Business Advisory Committee. I will place it before the Business Advisory Committee. Shri Manohar Lal.

**Not recorded.